तृतीय माला, खण्ड २२—अंक ६

सोमवार, २५ नवम्बर, १९६३
४ अग्रहायण, १८८५ (शक)

लोक-सभा
वाद-विवाद

(छठा सत्र)

3rd Lok Sabha

(खण्ड २२ में अंक १ से अंक १० तक हैं)

लोक-सभा सचिवालय
नई दिल्ली

एक रुपया

विषय सूची

पृष्ठ

सोमवार, २५ नवम्बर, १९६३ / ४ अग्रहायण, १८८५ (शक)

निधन सम्बंधी उल्लेख . . ६५७—६५९

श्री जवाहरलाल नेहरू

दैनिक संक्षेपिका ६६०

———

लोक-सभा

सोमवार, २५ नवम्बर, १९६३
४ अग्रहायण, १८८५ (शक)

लोक-सभा ग्यारह बजे समवेत हुई ।

(**अध्यक्ष महोदय** पीठासीन हुए) ।

निधन सम्बन्धी उल्लेख

†**प्रधान मंत्री, वैदेशिक कार्य मंत्री तथा अणु शक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू)** : अध्यक्ष महोदय, आज हम गम के और सदमे के वातावरण में इकट्ठे हुए हैं । हम में बहुत से लोगों के लिये यह एक व्यक्तिगत सदमा और दुःख का विषय है । किन्तु जो जुर्म किया गया है वह व्यक्तिगत से भी बढ़कर और भी कुछ है । यह मानवता के प्रति अपराध है । एक व्यक्ति जो जवान था, सफलता की चोटी पर खड़ा था, आदर्शवादी विचारों का था, दूरदर्शी था और साहसी था, जिसने अपने देशवासियों की और इससे भी अधिक दुनियां की भलाई करने का प्रयत्न किया था उसे इस दुनियां से उठा दिया गया है ।

प्रेजीडेंट केनेडी ने अपने देशवासियों के दिलों में अमरीकी संविधान में दिये हुए आदर्शों की याद ताजा की और इस बदलती हुई दुनियां में आज की समस्याओं का हल ढूंढने में उनका प्रयोग किया । उन्होंने उस तनाव को दूर करने का प्रयत्न किया जिसके भार से दुनियां पकी हुई है और परेशान है और स्थायी शांति के लिये प्रयत्न किये और इसमें वे सफल भी हुए । उन्होंने अपने को लोगों में परस्पर असमानता और अन्याय को दूर करने के कार्य में जुटा दिया । अपने स्वयं के महान देश में उन्होंने नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिये प्रयत्न किया, जिससे नीग्रो लोग वंश और रंग के आधार पर किये जाने वाले भेदभाव के बिना पूरी स्वतंत्रता और अवसरों का उपभोग कर सकें । अपने देश के बाहर शेष दुनियां के लिये, जिसका बहुत सा भाग अब भी गरीबी में है और जिन्हें प्रगति के लिये अवसर नहीं मिल पाता, उन्होंने उन अल्प विकसित देशों के विकास के लिये अपनी पूरी ताकत से कोशिश की जिससे सब जगहों के लोग स्वतंत्रता से प्राप्त वरदानों को देख सकें और आधुनिक विज्ञान और टेक्नोलोजी के फायदों को भी देख सकें ।

†मूल अंग्रेजी में

उनका अपना देश धनवान बना और उसमें प्रगति भी हुई। इन बातों के अलावा वहां प्रेजीडेंट केनेडी ने एक इन्सानियत का और एक नैतिक दृष्टिकोण भी पैदा किया जो दुनियां के सारे लोगों के संबंध में था।

इस महान् को ध्यय को पूरा करने के लिये वे जुट गये और एक महान् प्रेजीडेंट की एक ऐसी तस्वीर लोगों की आंखों के सामने आई जिसने उनके दिलों को उम्मीदों से भर दिया। अपने ऊंचे पद को उन्होंने सम्मान बढ़ाया और उसको प्रतिष्ठा बढ़ाई और दुनियां के दूर दूर के देशों के लोगों ने स्नेह और उम्मीद भरी आंखों से उनकी ओर देखा। उनके महान् पूर्वज, मुक्ति-दाता, अब्राहम लिंकन की याद ताजा हो गई और आज की दुनियां में चल रहे संघर्ष और उलझन के बीच इस स्वयंसिद्ध सत्य की झलक दिखाई दी कि सारे मनुष्य जन्म से ही एक दूसरे के बराबरी के दर्जे पर हैं और उनके कुछ जन्मजात अधिकार हैं जो उनसे छीने नहीं जा सकते और जब तक ये चीजें पूरी तरह प्राप्त नहीं कर ली जातीं तब तक अमरीका गणराज्य के स्थापकों का स्वप्न पूरी तरह साकार नहीं होगा।

उनकी कृपालु पत्नी, जिनसे आज हमें गहरी सहानुभूति है, भारत में आई थीं और हमें उनका स्नेहपूर्ण स्वागत करने का अवसर मिला था। हमें आशा थी कि प्रेजीडेंट केनेडी भी भारत के दोरे पर आयेंगे और उन्होंने स्वयं भी ऐसी इच्छा व्यक्त की थी। अब ऐसा नहीं हो सकेगा। क्योंकि एक हत्यारे ने उस जीवन का अन्त कर दिया है जो पहले ही इतनी सफलता प्राप्त कर चुका था और भविष्य के लिये अधिक सफलताओं की आशा रखता था।

एक महान प्रेजीडेंट और एक महापुरुष समाप्त हो गया है, उनके स्वयं के एक देशवासी ने उनके जीवन का अन्त कर दिया है। हमें इसके लिये दुःख है, होना भी चाहिये, किन्तु शायद उनकी निजन भी उन उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होगा जिनके लिये उन्होंने जीवन में परिश्रम किया था। आइये, हम उनकी खुशनुमायदा से प्रेरणा ग्रहण करें और उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें।

मुझे विश्वास है कि जो शब्द मैंने कहे हैं वे केवल मेरी भावनाओं के ही नहीं अपितु यहां उपस्थित समस्त सदस्यों की भावनाओं के और उन सब पक्षों की भावनाओं के जिनके प्रतिनिधि यहां उपस्थित हैं, व्यक्त करते हैं।

†**अध्यक्ष महोदय** : जो भावनाय अभी व्यक्त की गई हैं उनका मैं समर्थन करता हूं। मुझे विश्वास है कि यह ठीक ही कहा गया है कि ये भावनायें भारत की जनता की ओर से और यहां एकत्रित सभा के सदस्यों की ओर से व्यक्त किये गये हैं। इस हत्या की खबर सुनते ही हम लोगों को एक धक्का लगा। श्री केनेडी अमरीका के सबसे कम उम्र के और पहले रोमन केथोलिक प्रेजीडेंट थे। यद्यपि आरम्भ में, जब उन्होंने पद संभाला, उनकी उम्र और दूसरे कारणों को देखते हुये कुछ सन्देह प्रकट किये गये थे किन्तु जिस दिन से उन्होंने पद संभाला वे एक महान् नेता के रूप में लोकप्रियता और प्रसिद्धि प्राप्त करते गये। दुनियां जानती है कि वे स्पष्ट वक्ता थे। श्री केनेडी नवीन विचार धारा के व्यक्ति थे और उन विचारों को कार्य रूप देने का साहस भी उनमें था। वे उदार विचारों के थे उनकी समझ तीव्र थी और उनका साहस असामान्य था। अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में उन्होंने एक नये अध्याय का सूत्रपाल किया था और परीक्षण प्रतिबन्ध संधि में उनके योग के पश्चात् दुनियां में तनाव कम हो गया था। ऐसी आशा थी और विश्वास था कि मानवता के लिये शांति और समृद्धि को सुनिश्चित करने के कार्य में और भी प्रगति होगी। उन्होंने शांति और स्वतंत्रता के लिये कार्य किया और दलित क्षेत्रों की सहायता की। विकासोन्मुख देशों की

†मूल अंग्रेजी में

सहायता के लिये सर्वदा उत्सुक रहते थे। जातीय समानता के लिये उन्होंने सेवाभाव से कार्य किया और उस सेवा कार्य के लिये वे शहीद हो गये।

इस क्षति से दुनियां की एक बड़ी दौलत छिन गई है किन्तु भारत के लिये इस संबंध में दुःख अनुभव करने का एक विशेष कारण है कि भाग्य ने उसे एक सच्चे मित्र से वंचित कर दिया है जो उसकी कठिनाइयों को और उसकी महत्वकांक्षाओं को समझता था। १९६२ के संकट काल में हमारी सहायता करने के उनके तुरन्त निर्णय को और कठिनाइयों के बावजूद भी अपनी धारणाओं पर अड़े रहने की उनकी दृढ़ता को हम सदियों तक भुला नहीं सकेंगे। दुनियां ने एक महान नेता खो दिया है और भारत एक सच्चे मित्र से हाथ धो बैठा है। हम उनके निधन पर शोक प्रकट करते हैं।

मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करता हूं कि वे उनके प्रति सम्मान प्रकट करने के लिये एक मिनट के लिये शांत खड़े रहें।

तत्पश्चात् सदस्य थोड़ी देर तक मौन खड़े रहे।

†**अध्यक्ष महोदय** : मुझे सभा को खेद के साथ यह भी सूचना देनी है कि हम महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री श्री एम० एस० कन्नमवार का २४ नवम्बर, १९६३ को बम्बई में देहावसान हो गया है। वे १९५० से १९५२ तक अन्तर्कालीन संसद् के सदस्य थे।

शोक प्रकट करने के लिये सभा थोड़ी देर मौन खड़ी रहे।

तत्पश्चात् सदस्य थोड़ी देर तक मौन खड़े रहे।

†**अध्यक्ष महोदय** : प्रेजीडेंट केनेडी के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिये सभा कल ११ बजे तक के लिये स्थगित की जाती है।

इसके पश्चात् लोक सभा, मंगलवार, २६ नवम्बर, १९६३ / ५ अग्रहायण, १८८५ (शक) के ११ बजे तक के लिये स्थगित हुई।

---

†मूल अंग्रेज़ी में

(दैनिक संक्षेपिका)

सोमवार, २५ नवम्बर, १९६३

---

४ अग्रहायण, १८८५ (शक)

पृष्ठ

निधन सम्बन्धी उल्लेख . . . . . ६५७—६५९

प्रधान मंत्री और अध्यक्ष महोदय ने प्रेजीडेंट कैनेडी के निधन का उल्लेख किया। तत्पश्चात् सदस्य थोड़ी देर तक मौन खड़े रहे।

अध्यक्ष महोदय ने महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री श्री एम० एस० कन्नमवार के जो १९५० से १९५२ तक अन्तर्कालीन संसद् के सदस्य थे, देहावसान का भी उल्लेख किया। तत्पश्चात् सदस्य थोड़ी देर तक मौन खड़े रहे।

प्रेजीडेंट कैनेडी के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिये उनकी स्मृति में लोकसभा दिन भर के लिये उठ गई।

मंगलवार, २६ नवम्बर, १९६३ / ५ अग्रहायण, १८८५ (शक) के लिये कार्यावलि

अचल संपत्ति का अधिग्रहण तथा अर्जन (संशोधन) विधेयक और भेषज तथा चमत्कारिक उपचार (आपत्तिजनक विज्ञापन) संशोधन विधेयक पर विचार तथा इनका पारित किया जाना।

अनुदानों की अनुपूरक मांगें (सामान्य) १९६३–६४ तथा अतिरिक्त अनुदानों की मांगें (रेलवे) १९६१–६२ पर चर्चा तथा मतदान।

GMGIPND—LS III—1607 (A)LS—21-12-63—150.